पञ्चमः पाठः

अहो! राजते कीदृशीयं हिमानी

विद्यालयस्य वार्षिक पत्रिकायां पर्वतारोहणं कुर्वतां छात्राणां चित्राणि प्रदर्शितानि। तानि दृष्ट्वा सर्वे छात्राः आश्चर्यान्विताः शिक्षिकाम् उपेत्य तस्याः यात्रायाः वृत्तान्तं ज्ञातुम् अनुरोधं कुर्वन्ति। शिक्षिका तेषाम् आग्रहं मत्वा लेहलद्दाखयात्रायाः रोमाञ्चकारिणम् अनुभवं प्रस्तौति। किन्नु खलु असाध्यं दृढ़सङ्कल्पवताम्। नूनम् एतादृशानि वर्णनानि अस्माकं हृदयेषु कष्टसहिष्णुतायाः त्यागस्य च भावनाः जनयन्ति।

शब्दार्थः— **अहो**—अहा। **राजते**—शोभा पाती है। **कीदृशी**—जैसी। **इयम्**—यह। **हिमानी**—बर्फ का ढेर। **कुर्वतां छात्राणाम्**—करते हुए छात्रों के। **प्रदर्शितानि**—दिखाए गए। **आश्चर्यान्विताः**—हैरानी से युक्त। **उपेत्य**—पास जाकर। **असाध्यम्**—सिद्ध न किया जा सकने वाला, असम्भव। **दृढ़संकल्पवताम्**—पक्के इरादे वालों का। **जनयन्ति**—उत्पन्न करते हैं।

सरलार्थ— विद्यालय की वार्षिक पत्रिका में पर्वतारोहण करते हुए छात्रों के चित्र प्रदर्शित किय गये हैं। उनको देखकर सब छात्र अध्यापिका के पास जाकर उनकी यात्रा के वृत्तान्त को जानने के लिए अनुरोध करते हैं। अध्यापिका उनके आग्रह को मानकर अपने लेह-लद्दाख की यात्रा के रोमांचकारी अनुभव को प्रस्तुत करती है। पक्के इरादे वालों के लिए भला क्या कठिन (= असम्भव) होता है। निश्चय से ऐसे वर्णन हमारे दिलों में कष्टों को सहन करने की शक्ति को और त्याग की भावनाओं को जन्म देते हैं।

(छात्राः विद्यालयस्य पत्रिकायां चित्राणि पश्यन्ति)

कविता — **मान्ये, किम् एतानि चित्राणि पर्वतारोहणस्य सन्ति?**

शिक्षिका — **आम्। गतवर्षे द्वादशकक्षायाः छात्राः मम संरक्षकत्वे लेह-लद्दाखनगरं प्रयाताः।**

ममता — **चित्राणि वीक्ष्य प्रतिभाति यत् इदम् अभियानम् अतीव रोचकम् साहसिंक चासीत्।**

शिक्षिका — **नास्ति संदेहः। किं प्रक्षेपकमाध्यमेन तत् सर्वं यात्रावृत्तं द्रष्टुं वाञ्छथ?**

उभे — **आम्, अस्माकँ कक्षायाः सर्वे छात्राः द्रष्टुम उत्सुकाः।**

शिक्षिका — **शोभनम्। उपविशत। अहं प्रक्षेपकेण दर्शयामि।**

शब्दार्थः, **पर्यायवाचिशब्दाः टिप्पण्यश्च— मान्ये**—मान्या, सम्बोधन, एकवचन, हे माननीया। **पर्वतारोहणस्य—**पर्वतस्य आरोहणम्,-पर्वतारोहणम् तस्य, पर्वत पर आरोहण के। **द्वादशकक्षायाः—**बारहवीं कक्षा के। **संरक्षकत्वे—**संरक्षण में। **प्रयाताः—**प्र या क्त, प्रथमा, बहुवचनम, पर्यटन हेतु गये थे। **वीक्ष्य—**वि ईक्ष् ल्यप्, अवलोक्य, देखकर। **प्रतिभाति—**प्रतीयते, प्रतीत होता है। **अभीयानम्—**अभि या ल्युट्, अभियान। **साहसिकम्—**साहस + ठक्, साहसपूर्णम्। **चासीत्—**च + आसीत्। **प्रक्षेपकमाध्यमेन—**प्रक्षेपक की सहायता से। **दर्शयामि—**दृश, णिच्, लट्, प्रथम पु०, ए० व०, दिखाती हूँ, अवलोकयामि।

प्रसंग— यह अनुच्छेद 'अहो! राजते कीदृशीयं हिमानी' पाठ के आरम्भ से लिया गया है। छात्र पत्रिका में चित्र देखते हैं तथा शिक्षिका गत वर्ष के द्वादश कक्षा के छात्रों के यात्रा प्रसंगों के विषय में छात्रों की जिज्ञासा का समाधान करती है।

सरलार्थ— **(छात्र-छात्राएँ विद्यालय की पत्रिका में चित्र देखते हैं/देखती हैं।)**

कविता — हे माननीया जी, क्या ये चित्र पर्वतारोहण के हैं?

शिक्षिका — हाँ, गत वर्ष द्वादश कक्षा की छात्राएँ मेरे संरक्षक में लेह-लद्दाख नगर में गई थी।

ममता — चित्रों को देखकर प्रतीत होता है कि यह अभियान अतीव रोचक एवं साहसपूर्ण था।

शिक्षिका — (इस में) संशय नहीं है। क्या प्रक्षेपक के माध्यम से वह सब यात्रा वृतान्त आप सब देखना चाहती है।

दोनों (कविता व ममता)—हाँ, हमारी कक्षा की सब छात्राएँ देखने को उत्सुक हैं।

शिक्षिका — अच्छा। बैठो। मैं प्रक्षेपक से दिखाती हूँ।

• • • • •

(सर्वे कक्षायां यथास्थानम् उपविशन्ति, प्रक्षेपकं संचलति)

विजयः — **अहो। विपुलहिमराशिना धवला एते लद्दाखप्रदेशीया गिरयः अतीव शोभन्ते।**

वन्दना — **आचार्ये, किं लद्दाख-शब्दस्य कश्चिद् विशिष्टोऽर्थः?**

शिक्षिका — **शोभनः प्रश्नः। श्रृणुत, उत्तुङ्गपर्वतानाम् उपत्यकाभूमिम् लद्दाख इति वदन्ति।**

श्यामा — **एवम्। श्रूयते यत् लद्दाखमार्गेणैव तिब्बतक्षेत्रे बौद्धं-धर्मस्य प्रवेशः अभवत्।**

शिक्षिका — **सत्यम्। पश्यन्तु कथं लद्दाखे आस्तृतः नीलाकाशः छत्रवत् प्रतीयते। अपरं पश्यत-उपत्यकायां चित्रेऽस्मिन् या रेखा प्रतिभाति, सा उपत्यकां विभजन्ती सिन्धुनदी अस्ति। ग्रीष्मे नीलवर्णा भूमिः धूसरवर्णा जायते, यतः बालुका उड्डीय सर्वां भूमिम् आवृणोति।**

प्रसंग— प्रस्तुत संवादांश 'अहो! राजते कीदृशीयं हिमानी' पाठ से लिया गया है। इसमें प्रक्षेपक की सहायता से शिक्षिका लेह-लद्दाख की उपत्यकाओं तथा वहाँ सिन्धु नदी, ग्रीष्म की धूसरित बालुकापूर्ण भूमि को प्रक्षेप की सहायता से दिखाती है।

शब्दार्थः, पर्यायवाचिशब्दाः टिप्पण्यश्च— यथास्थानम्—स्थानम् अनतिक्रम्य, अव्ययीभावसमासः, स्थानानुसारम्, अपने-अपने स्थान पर। **गिरयः—**गिरि, प्रथमा, बहुवचनम्, पर्वताः, पर्वत। **उपत्यका—**घाटिका, पर्वतचरणे शृंखलामध्ये भूमि, घाटी। **आस्तृतः—**आ स्तृ क्त, पुं० प्र०, ए० व०, विस्तृतः, फैला हुआ। **विभजन्ती—**वि भज् शतृ, स्त्री० प्र०, ए० व०, विभागकुर्वती, विभाजित। **उड्डीय—**उत्, डी, ल्यप्, उड्डयनं कृत्वा, उड़कर करती हुई। **आवृणोतिं—**आ √वृ, लट्, प्र०, ए०, व०, आ √वृ, लट्, प्र०, ए० व० ढकती है।

सरलार्थ— सब कक्षा में अपने-अपने स्थान पर बैठ जाते हैं, शिक्षिका प्रक्षेपक को हिलाती है।

विजय — अरे, विशाल बर्फ के समूह में सफेद बने ये लद्दाख प्रदेश के पर्वत अत्यन्त शोभादायक हैं।

वन्दना — आचार्या जी, क्या लद्दाख शब्द का कोई विशेष अर्थ है?

शिक्षिका — अच्छा प्रश्न है। सुनो, ऊँचे पर्वतों की घाटी को लद्दाख कहते हैं।

श्यामा — ऐसा ही है। सुना जाता है कि लद्दाख के रास्ते से ही तिब्बत के क्षेत्र में बौद्धधर्म का प्रवेश हुआ था।

शिक्षिका — सच है। आप देखिए, कैसा लद्दाख में फैला हुआ नीला आकाश छत्र के समान प्रतीत हो रहा है। और देखो—घाटी में इस चित्र में जो रेखा दिखाई दे रही है वह उपत्यका (घाटी) को बाँटती हुई सिन्धु नदी है। ग्रीष्म में नीले रंग की भूमि धूसर वर्ण की (धूमिल) हो जाती है क्योंकि बालू रेत उड़कर सब भूमि पर छा जाता है।

• • • • •

प्रकृतिः **महोदये। चित्रे दृश्यमानानि कानि एतानि स्थलानि?**

शिक्षिका **एषः 'सेंग्ये' नाम राज प्रासादः। इदं 'लेह' इत्यभिधानेन प्रसिद्धं पर्यटनस्थलम्। एषः बौद्धधर्मस्य प्रसिद्धः प्राचीनश्च श्वेतस्तूपः। अयं स्तूपः रात्रौ दीपेषु प्रज्वलितेषु भव्यम् आलोकं वितरति शान्तिं च संदिशति।**

अनुपमः **मान्ये! दीर्घ-दीर्घाणि एतानि स्थानानि किं मठाः सन्ति?**

शिक्षिका **समीचीनम् उक्तम्। सिन्धुनद्याः पूर्वतः लेहनगरस्य दक्षिणपूर्वभागे "शे, थिक्शे, हेमिस, स्ताक्ना, माठो" नामानः एते प्रख्याता बौद्धमठाः सन्ति। "स्टाकपैलेस" इत्याख्यः प्रासादोऽपि अत्रैव वर्तते।**

शब्दार्थः, पर्यायवाचिशब्दाः टिप्पण्यश्च— दृश्यमानानि—दृश् कर्म०, शसच् नपुं०, प्र०, ब० व०, प्रदर्शितानि, दिखाए जा रहे हैं। **प्रख्याता—**प्र √ख्या क्त, पुं० प्र०, ब० व०, प्रसिद्धाः प्रसिद्ध। **भूमिष्ठम्—**बहु इष्ठन्, नपुं०, प्र०, ए० व०, अत्यधिकम्। **संदिशति—**सम् + दिश, लट्, प्र० पु०, ए०व०, प्रच्छति, देती है। **समीचीनम्—**उचितम्, सत्यम्, ठीक। **वितरति—**वि √तृ, लट् प्र० पु०, ए० व०।

प्रसंग— प्रस्तुत सवादांश 'अहो! राजते कीदृशीयं हिमानी' पाठ से लिया गया है। इसमें प्रकृति के द्वारा पूछे जाने पर शिक्षिका चित्र में दिखाए जा रहे प्रसिद्ध पर्यटनस्थलों का वर्णन करती है।

सरलार्थ—

प्रकृति — हे महोदये! चित्र में दिखाए जा रहे ये क्या स्थान हैं?

शिक्षिका — यह सेंग्ये नाम का राजमहल है। यह लेह नाम से प्रसिद्ध पर्यटनस्थल है। यह बौद्धधर्म का प्रसिद्ध तथा प्राचीन श्वेतस्तूप है। यह स्तूप रात में जलते दीपों में सुन्दर प्रकाश बिखेरता है और शान्ति का सन्देश देता है।

अनुपमा — हे मान्ये! बड़े लम्बे-चौड़े ये स्थान क्या मठ हैं?

शिक्षिका — ठीक कहा। सिन्धु नदी के पूर्व में लेह नगर के दक्षिण-पूर्व भाग में 'शे, थिक्शे, हेमिस, स्ताक्ना, माठो' नाम के ये प्रसिद्ध बौद्ध मठ हैं। स्टाकपैलेस नाम का महल भी है।

• • • • •

अनामिका **महोदये। बौद्धमठेषु किं किम् अवलोकितं भवत्या? ज्ञातुमिच्छामः।**

शिक्षिका **मठानां विशालता भव्यता च प्रेक्षकान् प्रसभम् आकर्षतः। भगवतो बुद्धस्य सप्रदशशताब्दयाः विशालकाया मूर्तिः पुरातत्त्वसम्बन्धीनि चित्राणि पर्यटकानाम् आकर्षणकेन्द्रम्।**

लद्दाखस्थितराजप्रासादस्य आन्तरिके भागे एको विशालः 'स्टाक पैलेस संग्रहालयो वर्तते, यस्मिन् सप्तसप्ततिः कक्षाः सन्ति।

विशालः **आचार्ये। बौद्धानां सामाजिक जीवनं कीदृशम्? किं तेऽपि उत्सवप्रियाः?**

शिक्षिका **मानवः स्वभावाद् एव उत्सवप्रियः। बौद्धानां 'गम्पा' नाम वार्षिकोत्सवः शीते आयाति। 'लामायारु' 'फियांग', 'ताहथोक'-आदीनि ग्रीष्मपर्वाणि भगवन्तं बुद्धं प्रति भक्तिभावं दर्शयन्ति। मठेषु उत्कीर्णा लेखा भित्तिलेखाश्च तिब्बत-शैल्याः परिचायकाः।**

शब्दार्थः, पर्यायवाचिशब्दाः टिप्पण्यश्च— आकर्षतः—आ, कृष, लट्, प्रथम, द्विवचनम्। **सप्तसप्ततिः—**77। **कक्षाः—**कमरे, भागाः।

प्रसंग— 'अहो! राजते कीदृशीयं हिमानी' पाठ से समुद्धृत प्रस्तुत संवादांश में अनामिका बौद्धमठों में क्या देखा यह जानना चाहती है। शिक्षिका ने बताया कि मठों की विशालता तथा भव्यता दर्शकों को आकर्षित करती ही है। साथ ही भगवान् बुद्ध की सत्रहवीं शताब्दी की विशालकाय प्रतिमा आकर्षण का केन्द्र है एवं पुरातत्व संबंधी चित्रों का वर्णन भी किया।

सरलार्थ—

अनामिका— महोदये, बौद्धमठों में आपके द्वारा क्या देखा गया, हम यह जानना चाहते हैं।

शिक्षिका — मठों की विशालता और भव्यता दर्शकों को बलात् आकर्षित करती है। भगवान् बुद्ध की सत्रहवीं शताब्दी की विशालकाय प्रतिमा व पुरातत्त्व सम्बन्धी चित्र पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र हैं। लद्दाख में स्थित राजमहल के अन्दरूनी भाग में एक विशाल स्टाकपैलेस म्यूजियम है जिसमें सतहत्तर कमरे (भाग) हैं।

विशाल — आचार्या जी, बौद्धों का सामाजिक जीवन कैसा था। क्या वे उत्सवप्रिय थे?

शिक्षिका — मानव स्वभाव से ही उत्सवप्रिय है। बौद्धों का गम्पा नाम का वार्षिक उत्सव सर्दी की ऋतु में आता है। लामायारु, फियांग, ताहथोक आदि ग्रीष्म ऋतु के उत्सव भगवान् बुद्ध के प्रति भक्तिभाव को दिखाते हैं। मठों में खुदे हुए लेख तथा दीवारों के लेख भी तिब्बती शैली का परिचय देते हैं।

• • • • •

प्रणवः **आचार्ये। लद्दाखस्य प्राकृतिकस्थलानां विषये किमपि ब्रवीतु भवती।**

शिक्षिका **कारगिले आक्रमणकारिणाम् अपसारणाय भारतीयैः वीरैः यत् शौर्यं प्रदर्शितं, यूयं जानीथ एव। सः प्रदेशः अत्रैव अस्ति। ट्रास, जान्सकारः, सुरुः - इति उपत्यकाभूमिषु शीते ऋतौ महान् हिमराशिः निपतति। ग्रीष्मे समागते सः द्रवीभूय कृषकाणां भूमिसेचने भूयिष्ठम् उपकरोति।**

पर्वतारोहणाय 'लिकिर' 'स्टाक' नाम्नी स्थले उपयुक्ते स्तः। ग्रीष्मे ऋतौ पर्वतारोहिणोऽत्र प्रायः दृश्यन्ते। घनीभूतं हिमं गिरिराजस्य शोभां सततं प्रवर्धयति। महाकवेः कालिदासस्य पद्यमिदम् अस्य सौन्दर्यं महिमानं च सततं वर्णयति-

अनन्तरत्नप्रभवस्य यस्य,
हिमं न सौभाग्यविलोपि जातम्।
एको हि दोषो गुणसन्निपाते,
निमज्जतीन्दोः किरणेष्विवाङ्कः।।

अन्वयः— अनन्तरत्न-प्रभवस्य यस्य हिमम् सौभाग्य-विलोपि न जातम्। एकः हि दोषः गुणसन्निपाते इन्दोः किरणेषु अङ्कः इव निमज्जति।

(अन्तहीन रत्नों को पैदा करनेवाले जिस हिमालय पर्वत की बर्फ उस पर्वत की सुन्दरता को नष्ट करनेवाली न बन पाई। मात्र एक दोष गुणों के समूह में, चन्द्रमा की किरणों में कलंक के समान तिरोहित हो जाता है। (छिप जाता है)

शब्दार्थः, पर्यायवाचिशब्दाः टिप्पण्यश्च— प्रवर्धयति—प्र वृध् णिच्, लट्, प्र० पु०, ए० व०, वृद्धिं करोति, बढ़ाती है। **महिमानम्**—महिमन्, द्वि०, ए०व०, महिमा के। **अनन्तरत्नप्रभावस्य**—अनन्तरत्नानां प्रभवः उत्पत्तिः यस्मात् तस्य, अनन्त रत्नों के उत्पादक के। **सौभाग्यविलोपि**—सौभाग्यस्य विलोपिन् नपुं०, प्र०, ए०व०, सौन्दर्यनाशकम्, सुन्दरता को नष्ट करनेवाला। **गुणसन्निपाते**—गुणानां सन्निपाते, गुणसमूहे, गुणों के समूह में। **निमज्जति**—नि + मज्ज्, लट्, प्रथम पु०, ए० व०, निमान् भवति, डूब जाता है।

प्रसंग— यह 'अहो! राजते कीदृशीयं हिमानी' पाठ का अन्तिम अनुच्छेद है। प्रणव के प्रश्न के उत्तर में शिक्षिका प्राकृतिक स्थानों का वर्णन करती है।

सरलार्थ—

प्रणव — आचार्या जी। आप लद्दाख के प्राकृतिक स्थानों के विषय में कुछ बताइए।

शिक्षिका — कारगिल में आक्रमणकारियों को हटाने के लिए भारतीय वीरों ने जो पराक्रम दिखाया था, तुम सब उसे जानते ही हो। वह प्रदेश यहाँ पर ही है। ट्रास, जान्सकार तथा सुरु—घाटी में शीत ऋतु में बहुत बर्फ पड़ती है। गर्मी के आने पर वह पिघलकर किसानों का भूमि सींचने में बहुत उपकार करती है।

पर्वतारोहण के लिए लिकिर तथा स्टाक नाम के दो स्थल उपयुक्त हैं। ग्रीष्म ऋतु में पर्वतारोही यहाँ प्रायः देखे जाते हैं। जमी हुई बर्फ गिरिराज हिमालय की शोभा को सदैव बढ़ाती है। महाकवि कालिदा का यह पद्य इसकी सुन्दरता और महिमा का सदा वर्णन करता रहता है।

अनुप्रयुक्त-व्याकरणम्

पाठाधारिताः सन्धिविच्छेदाः

पर्वतारोहणस्य	=	पर्वत + आरोहणस्य	**चासीत्**	=	च + आसीत्
विशिष्टोऽर्थः	=	विशिष्टः + अर्थः	**नास्ति**	=	न + अस्ति
मार्गेणैव	=	मार्गेण + एव	**कश्चित्**	=	कः + चित्
चित्रेऽस्मिन्	=	चित्रे + अस्मिन्	**उड्डीय**	=	उत् + डीय
इत्यभिधानेन	=	इति + अभिधानेन	**इत्याकर्ण्य**	=	इति + आकर्ण्य
प्रासादोऽपि	=	प्रासादः + अपि	**अत्रैव**	=	अत्र + एव
भगवतो बुद्धस्य	=	भगवतः + बुद्धस्य	**एको विशालः**	=	एकः + विशालः
संग्रहालयो वर्तते	=	संग्रहालयः + वर्तते	**स्वभावाद् एव**	=	स्वभावात् + एव
वार्षिकोत्सवः	=	वार्षिक + उत्सवः	**अत्रैव**	=	अत्र + एव
भित्तिलेखाश्च	=	भित्तिलेखाः + च	**पर्वतारोहिणोऽत्र**	=	पर्वत् + आरोहिणः + अत्र
पद्यमिदम्	=	पद्यम् + इदम्	**एको हि**	=	एकः + हि
दोषो गुणसन्निपाते	=	दोषः + गुणसन्निपाते	**निमज्जतीन्दोः**	=	निमज्जति + इन्दोः
किरणेष्विवाङ्.कः	=	किरणेषु + इव + अङ्.कः			

पाठाधारिताः समासविग्रहाः

समस्तपदानि	विग्रहाः	समास-नाम
पर्वतारोहणस्य	पर्वते आरोहरणम्, तस्य	सप्तमी तत्पुरुषः
द्वादश-कक्षायाः	द्वादशी कक्षा, तस्याः	षष्ठी तत्पुरुषः
लेह-लद्दाखनगरम्	लेहस्य लद्दाखनगरम्	षष्ठी तत्पुरुषः
प्रक्षेपकमाध्यमेन	प्रक्षेपस्य माध्यमः, तेन	षष्ठी तत्पुरुषः
यात्रावृत्तम्	यात्रायाः वृत्तम्	षष्ठी तत्पुरुषः
यथास्थानम्	स्थानम् अनतिक्रम्य	अव्ययीभावः
विपुलहिमराशिना	– विपुलम हिमम् विपुलहिमम्	कर्मधारयः
	– विपुलहिमस्य राशिः, तेन	षष्ठी तत्पुरुषः
उत्तुङ्गपर्वतानाम्	उत्तुङ्गाः पर्वताः, तेषाम्	कर्मधारयः
उपत्यकाभूमिम्	उपत्यकायाः भूमिः, ताम्	षष्ठी तत्पुरुषः
लद्दाखक्षेत्रेण	लद्दाखस्य क्षेत्रम्, तेन	षष्ठी तत्पुरुषः
तिब्बतक्षेत्रे	तिब्बतस्य क्षेत्रम्, तस्मिन्	षष्ठी तत्पुरुषः
बौद्धधर्मस्य	बौद्धानाम् धर्मः, तस्य	षष्ठी तत्पुरुषः
नीलाकाशः	नीलः आकाशः	कर्मधारयः
नीलवर्णा	नीलः वर्णः यस्याः सा	बहुव्रीहिः
धूसरवर्णा	धूसरः वर्णः यस्याः सा	बहुव्रीहिः
राजप्रासादः	राज्ञः प्रासादः	षष्ठी तत्पुरुषः

पर्यटनस्थलम्		पर्यटनाय स्थलम्	चतुर्थी तत्पुरुषः
श्वेतस्तूपः		श्वेतः स्तूपः	कर्मधारयः
दीर्घदीर्घाणि		दीर्घाणि दीर्घाणि	कर्मधारयः
बौद्धमठाः		बौद्धानां मठाः	षष्ठी तत्पुरुषः
बौद्धमठेषु		बौद्धानां मठाः, तेषु	षष्ठी तत्पुरुषः
सप्तमदशशताब्द्याः	–	सप्तदशी शताब्दी, तस्याः	षष्ठी तत्पुरुषः
	–	शतानाम् अब्दानां समाहारः शताब्दी	द्विगुः
विशालकाया		विशालः कायः यस्याः सा	बहुव्रीहि
आकर्षणकेन्द्रम्		आकर्षणस्य केन्द्रम्	षष्ठीं तत्पुरुषः
लद्दाखस्थित्	–	लद्दाखे स्थितः लद्दाखस्थितः	सप्तमी तत्पुरुषः
राजप्रसादस्य	–	लद्दाखस्थितः राजप्रसादः	कर्मधारयः
	–	राज्ञः प्रासादः राजप्रसादः	षष्ठी तत्पुरुषः
सामाजिक-जीवनम्		सामाजिकम् जीवनम्	कर्मधारयः
उत्सवप्रियाः		उत्सवाः प्रियाः येषाम् ते	बहुव्रीहिः
वार्षिकोत्सवः		वार्षिकः उत्सवः	कर्मधारयः
ग्रीष्मपर्वाणि		ग्रीष्मस्य पर्वाणि	षष्ठी तत्पुरुषः
भक्ति-भावम्		भक्तेः भावः, तम्	षष्ठी तत्पुरुषः
भित्तिलेखाः		भित्तौ लिखिताः लेखाः	मध्यमपदलोपि तत्पुरुषः
तिब्बत-शैल्याः		तिब्बतस्य शैली, तस्याः	षष्ठी तत्पुरुषः
प्राकृतिकस्थलानाम्		प्राकृतिकानि स्थलानि, तेषाम्	कर्मधारयः
आक्रमणकारिणाम्		आक्रमणं कुर्वन्ति इति तेषाम्	उपपद तत्पुरुषः
हिमराशिः		हिमस्य राशिः	षष्ठी तत्पुरुषः
उपत्यकाभूमिषु		उपत्यकानां भूमयः, तासु	सप्तमी तत्पुरुषः
भूमिसेचने		भूमेः सेचनम्, तस्मिन्	षष्ठी तत्पुरुषः
गिरिराजस्य		गिरेः राजा गिरिराजः, तस्य	षष्ठी तत्पुरुषः
महाकवेः		महान् चासौ कविः महाकविः, तस्य	कर्मधारयः
अनन्तरत्नप्रभवस्य	–	न अस्ति अन्तः येषां तानि अनन्तानि	बहुव्रीहिः
	–	अनन्तानि रत्नानि अनन्तरत्नानि	कर्मधारयः
	–	अनन्तरत्नानां प्रभवः यस्मात् तस्य	बहुव्रीहिः
सौभाग्य-विलोपि		सौभाग्यस्य विलोपि	षष्ठी तत्पुरुषः
पर्वतारोहिणः		पर्वते आरोहिणः	सप्तमी तत्पुरुषः
गुणसन्निपाते		गुणानां सन्निपातः, तस्मिन्	षष्ठी तत्पुरुषः

अनुप्रयोगस्य प्रश्नोत्तराणि

प्रश्न 1. अधोलिखितशब्दानां शुद्धम् उच्चारणं कुरुत सञ्चिकायां च लिखत–

ईदृशी, दृढ़सङ्कल्पः, सहिष्णुता, पर्वतारोहणम्, वीक्ष्य, द्रष्टुम्, उत्तुङ्गः, चित्राणि, आक्रमणकारिणाम् किरणेष्विवाङ्कः।

उत्तरम्– सभी शब्दों को छात्र कॉपी पर लिखें तथा उनका शुद्ध उच्चारण भी करें।

प्रश्न 2. समस्तपदानि रचयत—

(i) पर्वते आरोहणम् ....

(ii) विशालः कायः यस्याः सा ....

(iii) यात्रायाः वृत्तम् ....

(iv) उत्तुङ्गाः ये पर्वताः ते ....

(v) नीलः वर्णः यस्याः सा ....

(vi) महान् च असौ कविः ....

उत्तरम्—

(i) पर्वते आरोहणम्	**पर्वतारोहणम्**
(ii) विशालः कायः यस्याः सा	**विशालकाया**
(iii) यात्रायाः वृत्तम्	**यात्रावृत्तम्**
(iv) उत्तुङ्गाः ये पर्वताः ते	**उत्तुङ्ग पर्वताः**
(v) नीलः वर्णः यस्याः सा	**नीलवर्णा**
(vi) महान् च असौ कविः	**महाकवि।**

प्रश्न 3. अधोलिखितानां वाक्यानां रिक्तस्थानेषु कोष्ठकदत्तैः शब्दैः सह विभक्तिं प्रयुज्य वाक्यपूर्तिं कुरुत—

(क) ....(अस्मद्) कक्षायाः सर्वे छात्राः द्रष्टुमुत्सुकाः सन्ति।

(ख) पुरातत्त्वसम्बन्धीनि (चित्र).....................पर्यटकानाम् आकर्षणकेन्द्रम्।

(ग) ग्रीष्मपर्वाणि (भगवत्).....................बुद्धं प्रति भक्तिभावं दर्शयन्ति।

(घ) घनीभूतं हिमं (गिरिराज).....................शोभां सततं प्रवर्धयति।

(ङ) गुणसन्निपाते एकः (दोष).....................निमज्जति।

उत्तरम्— (क) **मम** कक्षायाः सर्वे छात्राः द्रष्टुमुत्सुकाः सन्ति।

(ख) पुरातत्त्वसम्बन्धीनि **चित्राणि** पर्यटकानाम् आकर्षणकेन्द्रम्।

(ग) ग्रीष्मपर्वाणि **भगवन्तं** बुद्धं प्रति भक्तिभावं दर्शयन्ति।

(घ) घनीभूतं हिमं **गिरिराजस्य** शोभां सततं प्रवर्धयति।

(ङ) गुणसन्निपाते एकः **दोषः** निमज्जति।

प्रश्न 4. अधोलिखितानां वाक्यानां रिक्तस्थानेषु कोष्ठकदत्तैः धातुभिः उचितरूपं निर्माय क्रियापदानि पूरयत—

(क) इदम् अभियानं रोचकं साहसिकं च (अस्-लङ्)............।

(ख) लद्दाखप्रदेशीया गिरयः अतीव (शोभ्-लट्)..................।

(ग) भवती लद्दाखप्रदेशस्य प्राकृतिकस्थलानां विषये किमपि (ब्रू-लोट्)............।

(घ) वार्षिकोत्सवः शीते ऋतौ (आ + या + लृट्)..................।

(ङ) ग्रीष्मे समागते हिमराशिः द्रवीभूय कृषकाणां भूमिसेचने भूयिष्ठं (उप + कृ + लट्)

उत्तरम्— (क) इदम् अभियानं रोचकं साहसिकं च **आसीत्।**

(ख) लद्दाखप्रदेशीया गिरयः अतीव **शोभन्ते।**

(ग) भवती लद्दाखप्रदेशस्य प्राकृतिकस्थलानां विषये किमपि **ब्रवीतु।**

(घ) वार्षिकोत्सवः शीते ऋतौ **आयाति।**

(ङ) ग्रीष्मे समागते हिमराशिः द्रवीभूय कृषकाणां भूमिसेचने भूयिष्ठं उपकरोति।

प्रश्न 5. अधोलिखितेषु वाक्येषु वाच्यपरिवर्तनं कुरुत—

(क) ईदृशीं दुर्गमां यात्रां विद्यालयस्य ....
छात्राः सम्पादितवन्तः। ....

(ख) अस्माभिः प्रक्षेपकमाध्यमेन यात्रावृत्तं दृश्यते ....

(ग) उत्तुंगपर्वतानाम् उपत्यकाभूमिं लद्दाख इति कथयन्ति ....

(घ) मठानां भव्यता प्रेक्षकान् प्रसभम् आकर्षति। ....

(ङ) कारगिले आक्रमणकारिणाम् अपसारणाय भारतीयैः वीरैः शौर्यं प्रदर्शितम्। ....

उत्तरम्— (क) ईदृशीं दुर्गमां यात्रां विद्यालयस्य छात्रैः सम्पादिता।

(ख) वयं प्रक्षेपकमाध्यमेन यात्रावृत्तं पश्यामः।

(ग) उत्तुंगपर्वतानाम् उपत्यकाभूमिः 'लद्दाख' इति कथ्यते।

(घ) मठानां भव्यतया प्रेक्षकाः प्रसभम् आकृष्यन्ते।

(ङ) कारगिले आक्रमणकारिणाम् अपसारणाय भारतीयाः वीराः शौर्यं प्रदर्शितवन्तः।

प्रश्न 6. अधोलिखिते 'अ' स्तम्भे लिखितानां विशेषणैः सह 'ब' स्तम्भस्थानां विशेष्यपदानां संयोजनं कुरुत—

'अ' स्तम्भः	'ब' स्तम्भः
(*i*) दृढ़ः	(क) पर्वतारोहणम्
(*ii*) विघ्नबहुलम्	(ख) हिमम्
(*iii*) रोचकम्	(ग) हिमराशिः
(*iv*) धवलः	(घ) यात्रावृत्तम्
(*v*) नीलवर्णा	(ङ) पर्यटनस्थलम्
(*vi*) प्रसिद्धम्	(च) मूर्त्तिः
(*vii*) विशालकाया	(छ) भूमिः
(*viii*) सौभाग्यविलोपि	(ज) सङ्कल्पः

उत्तरम्—

'अ' स्तम्भः	'ब' स्तम्भः
(*i*) दृढ़ः	(ज) सङ्कल्पः
(*ii*) विघ्नबहुलम्	(ङ) पर्यटनस्थलम्
(*iii*) रोचकम्	(घ) यात्रावृत्तम्
(*iv*) धवलः	(ग) हिमराशिः
(*v*) नीलवर्णा	(छ) भूमिः
(*vi*) प्रसिद्धम्	(क) पर्वतारोहणम्
(*vii*) विशालकाया	(च) मूर्त्तिः
(*viii*) सौभाग्यविलोपि	(ख) हिमम्

प्रश्न 7. निर्देशानुसारम् उत्तरत—

(*i*) 'नीलावर्णा भूमिः' अनयोः पदयोः किं विशेषणपदम्?

(*ii*) 'विस्तृतः' अस्य स्थाने किं पदं संवादे प्रयुक्तम्?

(*iii*) 'प्रवेशः' इति अस्य विलोमपदं किम्?

(*iv*) 'आवृणोति' इत पदे उपसर्गः कः, कः च धातुः?

(*v*) 'नीलाकाशः छत्रवत् प्रतीयते' अत्र क्रियापदं चिनुत।

(*vi*) 'तिब्बतक्षेत्रे बौद्धधर्मस्य प्रवेशः अभवत्' अत्र कर्तृपदं चिनुत।

उत्तरम्— (*i*) नीलवर्णा (*ii*) आस्तृतः (*iii*) निष्क्रमः

(*iv*) आ उपसर्गः, वृ धातुः, (*v*) प्रतीयते, (*vi*) प्रवेशः।

प्रश्न 8. एकपदेन उत्तरत—

(*i*) केन मार्गेण छात्रैः पर्वतारोहणं कृतं स्यात्?

(*ii*) विद्या वित्तं च कथं प्राप्यते?

(*iii*) शिक्षिकया यात्रावृत्तं केन प्रदर्शितम्?

(*iv*) स्टाकपैलेससंग्रहालये कति कक्षाः सन्ति?

(*v*) बौद्धानां वार्षिकोत्सवः कस्मिन् ऋतौ आयाति?

उत्तरम्— (*i*) लद्दाखमार्गेण, (*ii*) उद्यमेन (*iii*) प्रक्षेपकेण,

(*iv*) सप्तसप्ततिः (*v*) शीते।

प्रश्न 9. पूर्णवाक्येन उत्तरत—

(*i*) पर्वतारोहणस्य अभियानं कीदृशम् आसीत्?

(*ii*) लद्दाखशब्दस्य कः विशिष्टः अर्थः?

(*iii*) कः स्तूपः रात्रौ दीपेषु प्रज्वलितेषु भव्यम् आलोकम् वितरति?

(*iv*) लेहनगरे प्रख्याता बौद्धमठाः के सन्ति?

(*v*) एकः दोषः कुत्र निमज्जति?

उत्तरम्— (*i*) पर्वतारोहणस्य अभियानम् अतीव रोचकं साहसिकं आसीत्?

(*ii*) "उत्तुङ्गपर्वतानाम् उपत्यकाभूमिः" इति लद्दाख शब्दस्य विशिष्ट अर्थः।

(*iii*) 'लेहे' इति बौद्धधर्मस्य प्रसिद्धः प्राचीनश्च श्वेतस्तूपः रात्रौ दीपेषु प्रज्वलितेषु भव्यम् आलोकम् वितरति।

(*iv*) लेहनगरे प्रख्याता बौद्धमठाः 'शे, थिक्शे, हेमिस, स्ताक्ना, माठो नामनाः सन्ति।

(*v*) एकः दोषः गुणसंन्निपाते निमज्जति।

प्रश्न 10. रेखाङ्कितपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत—

(*i*) <u>भारतीयसैनिकानां</u> कष्टसहिष्णुता त्यागभावना च श्लाघीनीये स्तः।

(*ii*) अस्मिन् भित्तिचित्रे <u>पर्वतारोहणस्य</u> दृश्यम् अस्ति।

(*iii*) छात्राः <u>प्रक्षेपकमाध्यमेन</u> यात्रावृत्तम् अपश्यन्।

(*iv*) 'लेह' इति <u>बौद्धधर्मस्य</u> प्राचीनः श्वेतस्तूपः।

(*v*) 'गम्पा' नाम वार्षिकोत्सवः <u>शीते ऋतौ</u> आयाति।

(*vi*) 'कारगिले' भारतीयैः वीरैः <u>शौर्यं</u> प्रदर्शितम्।

उत्तरम्— (*i*) <u>केषां</u> कष्टसहिष्णुता त्यागभावना च श्लाघीनीये स्तः।

(*ii*) अस्मिन् भित्तिचित्रे <u>कस्य</u> दृश्यम् अस्ति।

(*iii*) छात्राः <u>केना</u> यात्रावृत्तम् अपश्यन्।

(*iv*) 'लेह' इति <u>कस्य</u> प्राचीनः श्वेतस्तूपः।

(*v*) 'गम्पा' नाम वार्षिकोत्सवः <u>कदा</u> आयाति।

(*vi*) 'कारगिले' भारतीयैः वीरैः <u>किं</u> प्रदर्शितम्।

पाठःविकासः

भावविकासः

'लद्दाख' इति शब्दः 'ला डैग्स' इति द्वयोः शब्दयोः मेलनेन निर्मितः। उच्चतमपर्वतीय-उपत्यकानां (दर्रे इति हिन्दीभाषायाम्) भूमिः। 'जम्मू तथा कश्मीर' इति प्रदेशे पूर्वतमभागे समुद्रतटात् 11000 फीट् उन्नतः अयं भागः। मनाली-लेह-मार्गः विश्वस्य द्वितीयः उच्चतमः मार्गः। अयं 480 कि. मी. विस्तृतः, वर्षस्य अष्टमासेषु हिमाच्छादितः एव तिष्ठति। ओषजनस्य मात्रा लेहभागे न्यूना जायते।

लेह

नांग्यालसाम्राज्यस्य 17 शताब्द्यां राजधानी आसीत्। लेहस्थितशान्तिस्तूपः 1985 तमे वर्षे दलाईलामामहाभागैः उद्घाटितः। प्राचीनतमबौद्ध-मठः 'स्वस्तिक' अत्रैव विराजते। नरोपागुहायाः मुखम् काचभित्तिना अवरुद्धं वर्तते। अत्रैव कश्मीरी योगी निरोपा ध्यानम् अकरोत्।

रूपशूक्षेत्रम्

14,432 फीट् उन्नतम्। अत्र त्सो मोरीरि सरः 15 × 5 मीलविस्तृतम् विराजते। वन्यगर्दभः नील-अजः अत्रैव द्रष्टुं शक्यते।

भावविकासः

'लद्दाख' यह शब्द 'ला डैग्स' इन दो शब्दों के मेल से बना है, जिसका अर्थ है– उच्चतम पर्वतीय घाटी (अर्थात् दरी)। जम्मू तथा कश्मीर प्रदेश में पूर्व के भाग में समुद्रतट से 11000 फुट की ऊँचाई पर यह भाग है। मनाली-लेहमार्ग विश्व का दूसरा सबसे ऊँचा मार्ग है। यह 480 किलोमीटर विस्तृत है तथा साल में आठ महीने तक बर्फ से ढका रहता है। ऑक्सीजन की मात्रा भी लेहमार्ग में कम हो जाती है।

लेह

17वीं शताब्दी में नांग्यल साम्राज्य की राजधानी लेह थी। लेह स्थित शान्तिस्तूप 1985 ईस्वी में महाभाग दलाईलामा महोदय ने किया था। यहाँ पर ही 'स्वास्तिक' नाम का सबसे प्राचीन बौद्धमठ स्थित है। नरेपा गुफा का मुख काँच की दीवार से बन्द रहता है। यही काश्मीरी योगी निरोपा ध्यान लगाया करते थे।

रूपेशक्षेत्रम्

14432 फुट ऊँचा है। यहाँ त्सो मोरीरि सर नामक तालाब 15 × 5 मील विस्तृत है। जंगली गधा तथा नीले रंग का बकरा यहाँ पर ही देखा जा सकता है।

भाषाविकासः

'क्त' प्रत्ययः भूतकाले कर्मवाच्ये प्रयुज्यते। परन्तु कर्तृवाच्ये अपि कैश्चिद् धातुभिः सह अस्य प्रयोगः भवति यथा द्वादशकक्षायाः छात्राः मया सह प्रयाताः। के च ते धातवः इति पश्यामः।

गत्यर्थकधातुभिः सह — यथा — सर्वेशः गतः।

कैश्चित् अकर्मकधातुभिः सह — यथा — वृक्षः पतितः।

परन्तु शिशुना शयितम्, मूषिकेण जीवितम्, बालिकाभिः क्रीडितम्।

कानिचित् क्तान्तरूपाणां उदाहरणानि-

मन् - मत	श्रम् - श्रान्त	मुच् - मुक्त
हन् - हत	भ्रम् - भ्रान्त	त्यज् - त्यक्त
तन् - तत	शम् - शान्त	भज् - भक्त
गम् - गत	क्षम् - क्षान्त	भुज् - भुक्त

नश्	-	नष्ट	युध्	-	युद्ध	वच्	-	उक्त
स्पृश्	-	स्पृष्ट	बुध्	-	बुद्ध	वस्	-	उषित
दृश्	-	दृष्ट	क्रुध्	-	क्रुद्ध	वद्	-	उदित
पुष्	-	पुष्ट	लभ्	-	लब्ध	ग्रह्	-	गृहीत
प्रच्छ्	-	पृष्ट	सह्	-	सोढ्	क्षि	-	क्षीण
यज्	-	इष्ट	स्था	-	स्थित	गुह्	-	गूढ़
स्वप्	-	सुप्त	शास्	-	शिष्ट	रूज्	-	रूग्ण
वह्	-	ऊढ	हा	-	हीन	भज्	-	भग्न

क्तान्तपदानाम् रूपाणि त्रिषु लिङ्गेषु भवन्ति

यथा

पुं.	**स्त्री.**	**नपुं**
कृतः कृतौ कृताः	कृता कृते कृताः	कृतम् कृते कृतानि
कृतम् कृतौ कृतान्	कृताम् कृते कृताः	कृतम् कृते कृतानि

क्तान्तपदानां प्रयोगः त्रिविधः

(*i*) **क्रियावत्** — रामेण रावणः हतः।
बुद्धेन शान्तिसन्देशः प्रसारितः।

(*ii*) **विशेषणवत्** — शान्ता तृषा, निर्मितं गृहम्।

(*iii*) **संज्ञावत्** — हसितम्, रूदितम्, गतम्, 'जागरितम्

उदाहरणानि

कष्टे धैर्यं धृतं तेन, मया धैर्यं विनाशितम्,
तेनावाप्तं सुखं तेन, मम सौख्यं विनिर्गतम्।।
प्रेषितं हि मया पत्रम्, रामेणाधिगतं हि तत्।
ज्ञातः उदन्तः सर्वश्च, तेन जाता प्रसन्नता।

क्तवतु प्रत्ययः कर्तृवाच्ये प्रयुज्यते। क्तान्तरूपेण सह 'वत्' संयोज्य 'क्तवतु' अन्तरूपं जायते।

यथा

कृत = कृतवत्, गत = गतवत् इत्यादयः।

पदानुशीलनी

कुर्वताम् (वि.)	(कृ शतृ ष. ब. व.)	पर्वतारोहणं कुर्वन्ति इति तेषाम्; पर्वतारोहण करते हुओं का; of those who are climbing the mountains.
उपेत्य (अ.)	(उप इ ल्यप्)	दृष्ट्वा; देखकर; having seen.
यथास्थानम् (अ.)	(स्थानम् अनतिक्रम्य, अव्य. समासः)	स्थानानुसारम्; अपने-अपने स्थान पर; as per their seats.
गिरयः (सं.)	(गिरि, प्र. ब. व.)	पर्वताः; पहाड़; mountains.
उपत्यकाः (सं.)		पर्वतस्य चरणे शृंखलामध्ये भूमिः; घाटी, Valley.
आस्तृतः (वि.)	(आ स्तृ क्त, पुं. प्र. ए. व.)	विस्तृतः; फैला हुआ; spread over.

विभजन्ती (वि.)	(वि + भज् शतृ, स्त्री. प्र. ए. व.)	विभागं कुर्वती, विभाजित करती हुई; deviding.
उड्डीय (अ.)	(उत् डी ल्यप्)	उड्डयनं कृत्वा; उड़कर, having flown.
दृश्यमानानि (वि.)	(दृश् कर्म. शानच्, नपुं, प्र. ब. व.)	प्रदर्शितानि; दिखाए जा रहे; being shown.
प्रख्याताः (वि.)	(प्र + ख्या क्त, पुं. प्र. ब. व.)	प्रसिद्धाः; प्रसिद्ध; famous.
भूयिष्ठम् (वि.)	(बहु इष्ठन्, नपुं प्र. ए. व.)	अत्यधिकम्; बहुत अधिक greatly.
प्रवर्धयति (क्रि.)	(प्र वृध् णिच्, लट् प्र. पु. ए. व.)	वृद्धिं करोति, बढ़ाती है; increases.
महिमानम्	(महिमन् द्वि. ए. व.)	महत्वम्, गरिमाणम्; महिमा को; greatness.
अनन्तरत्नप्रभवस्य	(न अन्तः अनन्तः, (नञ् तत्पु.) अनन्तानि रत्नानि, कर्मधारयः; अनन्तरत्नानां प्रभवः यस्मात् तस्य, बहुब्रीहीः)	अनन्तानां रत्नानां जन्मदाता यः हिमालयः तस्य; अनन्त रत्नों के उत्पादक (हिमालय) के; of Himalaya, who is full of gems.
सौभाग्यविलोपि	(सौभाग्यस्य विलोपिन् नपुं. प्र. ए. व.)	सौभाग्यस्य विनाशकम्; सौन्दर्य का हरण करने वाला; destroyer of the beauty.
गुणसन्निपाते	(गुणानां सन्निपाते)	गुणसमूहे; गुणों के समूह में; in the heap of merits.
अङ्क		चिन्हम्; दाग, धब्बा; stain, spot.